IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गोस्वामी तुलसीदास जी के साहित्य में सगुण राम भक्ति काव्य परंपरा।

Babita Deshwal

शोध सारांश – राम काव्य परंपरा का यद्यपि एक लंबा इतिहास है, तथापि इस परंपरा के केन्द्र बिन्दु हैं गोस्वामी तुलसीदास, जो हिन्दी काव्यप्रकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति सर्वत्र अपना प्रकाश पुंज विकोर्ण कर रहे हैं। रामकाव्य परंपरा में उनके ग्रंथ मील का पत्थर सिद्ध हुए हैं। **'रामचरितमानस'** हिन्दू धर्म, संस्कृति, आचार–विचार का मापदंड बन गया है। यह ग्रंथ जितना लोकप्रिय हुआ है, उसकी कोई समता नहीं है। उच्चकोटि के काव्यतत्व से युक्त इस ग्रंथ में मानव धर्म की अद्‌भुत ब्याख्या की गई है। राम काव्य परंपरा के प्रमुख कवि होने से हम तुलसी को ही केन्द्र मानकर रामकाव्य की विशेषताओं का विवेचन करते हैं। रामकाव्य परंपरा को आम जन सामान्य तक पहुँचाने में गोस्वामी तुलसीदास जी का बहुमूल्य योगदान है। गोस्वामी तुलसीदास जी का संपूर्ण साहित्य इसका उदाहरण है। इस रामकाव्य परंपरा के माध्यम से तुलसीदास जी ने एक आदर्शवादी समाज की कल्पना की है। जिसकी गोस्वामी तुलसीदास जी के समय में बहुत जरूरत थी। रामकाव्य परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रतिभा के समक्ष, सभी कवि फीके लगते हैं। तुलसीदास जी का स्थान इतना ऊँचा है कि अन्य कवियों का महत्व गौण हो जाता है।

भूमिका – राम काव्य–परंपरा का सम्बन्ध वैष्णव धर्म से है। यह धर्म बौद्धिक धर्म के कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया – स्वरूप उत्पन्न हुआ। इस धर्म ने भगवान की भक्ति का सहारा लिया और इसमें अवतारवाद की धारणा पनपने लगी। कालान्तर में भगवान विष्णु के दो रूप – राम और कृष्ण प्रचलित हो गए। पौराणिक अध्ययन से पता चलता है कि राम और कृष्ण का वर्तमान स्वरूप ईसा से पाँच सौ वर्ष पूर्व स्थापित हो चुका था। स्वामी रामानन्द के प्रयत्नों से 11वीं शताब्दी में रामभक्ति का प्रवर्त्तन हुआ। इन्होंने **'श्री सम्प्रदाय'** की स्थापना की। राघवानन्द इसके प्रमुख आचार्य थे। इन्हीं के शिष्य थे – **स्वामी रामानन्द।** इनका दृष्टिकोण बडा उदार था। इन्होंने शूद्रों तथा नारियों के साथ–साथ सभी जातियों के लिए राम–भक्ति के द्वार खोल दिए। **नरहरिदास** इन्हीं के शिष्य थे। गोस्वामी तुलसीदास नरहरिदास के शिष्य थे, और उन्होंने राम–भक्ति काव्यधारा को आगे बढाया। रामभक्ति काव्यधारा में गोस्वामी तुलसीदास जी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

रामभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि

स्वामी रामानुजाचार्य – भक्ति के सम्यक् प्रसार के लिए जैसे दृढ आधार की आवश्यकता थी, वैसा दृढ आधार स्वामी रामानुजचार्य जी (संवत् 1073) ने खडा किया, उनके विशिष्टाद्वैतवाद के अनुसार ब्रह्म के ही अंश जगत् के सारे प्राणी हैं। जो उसी से उत्पन्न होते हैं और उसी में लीन होते हैं। रामानुज जी के **'श्री संप्रदाय'** में विष्णु या नारायण की उपासना है। यहीं से रामभक्ति धारा का मार्ग निकलता है।

रामानन्द – मूलरूप से रामभक्ति काव्यधारा का प्रारम्भ रामानन्द से माना जाता है। ये **'रामावत सम्प्रदाय'** के प्रवर्तक थे। इनके गुरू का नाम राघवानन्द था। इन्होंने रामभक्ति को जनसाधारण के लिए सुगम बनाया। **हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें 'आकाश धर्मगुरू' कहा है।**

अग्रदास – ये कृष्ण पयहारी के शिष्य थे, और नाभादास के गुरू थे। 'रामकाव्य परंपरा' में **रसिक** भावना का समावेश इन्होंने ही किया। ये 'स्वय को **'अग्रकली'** (जानकी की सखी) मानकर काव्य रचना की।

नाभादास – ये अग्रदास जी के शिष्य, राम के बडे भक्त और साधुसेवी थे। सवंत् 1657 के लगभग, और गोस्वामी तुलसीदास जी की मृत्यु के बहुत पीछे तक जीवित रहे। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ **'भक्तमाल'** संवत् 1642 के लगभग लिखा गया। संवत् 1769 में प्रियादास जी ने उसकी टीका लिखी। इस ग्रंथ में 200 भक्तों के चमत्कारपूर्ण चरित्र 316 छप्पयों में लिखे गये हैं। नाभादास का तुलसीदास के संबंध में प्रसिद्ध छप्पय यह है:–

''अब भक्तन सुख दैन बहुरि लीला बिस्तारी।
रामचरनरसमत्त रहत अहनिसि ब्रतधारी।
संसार अपार के पार को सुगम रूप नौका लियो।
कलि कुटिल जीव निस्तारहित वाल्मीकि तुलसी भयो''

प्राणचंद चौहान – संस्कृत में रामचरित संबंधी कई नाटक हैं, जिनमें कुछ तो नाटक के साहित्यिक नियमानुसार हैं, और कुछ केवल संवाद रूप में होने के कारण नाटक कहे गये हैं। इसी पिछली पद्धति पर संवत् 1667 में इन्होंने **'रामायण महानाटक'** लिखा। रचना का ढंग नीचे दिए अंश से ज्ञात हो सकता है:–

''संवत् सोरह सै सत साठा। पुन्य प्रगास पाय भय नाठा।
से सारद माता कर दाया। बरनौं आदि पुरूष की माया।''

हृदयराम – ये पंजाब के रहने वाले और कृष्णदास के पुत्र थे। इन्होंने संवत् 1680 में **'हनुमन्नाटक'** लिखा। जो रामभक्ति काव्यधारा पर आधारित है। इस नाटक की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

''जानकी को मुख न बिलोक्यो ताते कुंडल,
न जानत हौं, बीर पायँ छुवै रघुराई के।''

गोस्वामी तुलसीदास– गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान रामकाव्य परंपरा में सर्वोपरि है। इनका जन्म संवत् 1583 स्वीकार किया गया है। मिरजापुर के प्रसिद्ध रामभक्त पं0 रामगुलाम द्विवेदी ने जनश्रुति के आधार पर इनका जन्म सवंत् 1589 स्वीकार किया है। सर जॉर्ज ग्रिमर्सन ने भी इसी जन्म संवत् को मान्यता दी है। अत: साक्ष्य के आधार पर भी इनकी जन्मतिथि संवत् 1589 (सन 1532) अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होती है। **'मूलगोसाई चरित'** और तुलसी चरित' में इनका जन्मस्थान **'राजापुर'** बताया गया है।

'मूलगोसाई चरित' और **तुलसी चरित'** के आधार पर इनके पिता का नाम **'आत्माराम दूबे'** और माता का नाम **'हुलसी'** था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन्हें **'सरयूपरायण–ब्राह्मण'** माना है। **'विनयपत्रिका'** आदि के साक्ष्यों के आधार पर इनका बाल्यकाल अत्यंत विषम परिस्थितियों में व्यतीत हुआ था। माता–पिता के छोड दिये जाने पर बाबा नरहरिदास ने इनका पालन–पोषण किया और ज्ञान–भक्ति की शिक्षा–दीक्षा भी दी। गोस्वामी जी का विवाह दीनबंधु पाठक की कन्या **'रत्नावली'** से हुआ था।

अत्यधिक पत्नी–प्रेम आसक्ति के कारण जब एक बार इन्हें अपनी पत्नी से मधुर भर्त्सना– **''लाज न आई आपको दौरे आएंहु साथ''** मिली। इनकी भावधारा सहसा लौकिक विषयों से विमुख हो कर प्रभु–प्रेम की ओर उन्मुख हो गयी। इनका निधन सम्वत् 1680 शुक्ला सप्तमी को हुआ।

गोस्वामी तुलसीदास जी के सम्बन्ध में विभिन्न विचारकों के विचार एवं कथन–

स्मिथ के अनुसार– ''तुलसीदास मुगल काल के सबसे महान व्यक्ति थे।''

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार– ''लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय का अपार धैर्य रखता है।'' **''तुलसी का काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।''**

किम्यर्सन के अनुसार– ''बुद्धदेव के पश्चात् सबसे बडे लोकनायक तुलसीदास है।''

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार– ''रूपको का जैसा निर्वाह तुलसी ने किया है, किसी अन्य ने नहीं। **'रामचरितमानस'** में ज्ञान भक्ति के विवेचन में लंबा सांगरूपक प्रस्तुत किया गया है।''

भिखारी दास के अनुसार– '' तुलसी गंग दूवोथयो, सुकविन को सरदार।''

हरिऔध के अनुसार– ''कविता करके तुलसी न लसै।
कविता पा लसी तुलसी की कला।।''

गोस्वामी तुलसीदास के सहित्य में रामभक्ति काव्यधारा– गोस्वामी तुलसीदास जी के साहित्य में रामभक्ति काव्य परंपरा का मुख्य स्थान है। इनके आराध्य देव भगवान राम थे। इनकी भक्ति भावना दास्य भाव की थी। काव्य–रूप की दृष्टि से तुलसी–चरित प्रामाणिक रचनाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

(क) प्रबन्ध काव्य– 'रामचरितमानस, 'रामलला नहछू', 'पार्वती मंगल', 'जानकी मंगल'।

(ख) गीति काव्य– 'गीतावली', 'कृष्ण गीतावली', 'विनय पत्रिका'।

(ग) मुक्त काव्य– 'वैराग्य–संदीपनी', बरवै–रामायण', 'दोहावली', 'कवितावली', ' हनुमान बाहुक'।

सगुण रामभक्ति काव्य शाखा पर आधारित

तुलसीदास जी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य– 'रामचरितमानस' तुलसीदास जी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। इसमें रामकथा को सात काण्डों में विभक्त किया गया है। इसका रचना काल संवत् 1631 माना गया है। यह ग्रन्थ दोहा चौपाई शैली में लिखा गया है। इसकी साहित्यिक भाषा अवधी है। 'मानस' की कथा का आधार 'वाल्मीकि रामायण' ही है। परन्तु इसमें 'कथा–विस्तार' दार्शनिक विचारों तथा भक्ति–भावना आदि के लिए 'अध्यात्म रामायण', 'गीता', 'उपनिषद' 'पुराण' आदि का भी तुलसीदास जी ने आश्रय लिया है। इस ग्रन्थ में राम के आदर्शवादी रूप का वर्णन किया गया है, जो समाज के लोगों को भक्ति मार्ग के साथ–साथ आदर्शवादी रूप का वर्णन किया गया है, जो समाज के लोगों को भक्ति मार्ग के साथ–साथ आदर्शवादी समाज का भी ज्ञान देता है।

रामलला नहछू – यह ग्रन्थ राम के ध्यान में रखकर लिया गया है। इसमें कुल 20 छनद हैं।

जानकी मंगल– यह ग्रन्थ 213 छन्दों में लिखा गया है, इसमें राम का विवाह वर्णित है।

गीतावली– 'गीतावली' में रामकथा को 'गीतिशैली' में कहा गया है। इसमें सात काण्ड हैं।

विनय पत्रिका– तुलसी के साहित्य में 'रामचरितमानस' के उपरान्त 'विनय पत्रिका' का स्थान है। यह रचना एक पत्रिका के रूप प्रस्तुत है, जो राम के सम्मुख हनुमान द्वारा प्रस्तुत की गई है। कवि के भक्ति, ज्ञान, वैराग्य तथा संसार की असारत आदि से सम्बन्धित उद्गार अत्यन्त मार्मिक है। यह ब्रजभाषा में है।

वैराग्य संदीपनी – यह कवि की आरम्भिक रचना प्रतीत होती है। इसमें दोहा, चौपाई और सोरठा छन्दों का प्रयोग है। 62 छन्दों की इस पुस्तिका में राम–महिमा, ज्ञान–वैराग्य तथा सन्त–स्वभाव आदि की चर्चा है।

बरैव रामायण– इसमें 6 छन्दों में राम की कथा वर्णित है।

रामाज्ञ प्रश्न– इसमें सात सर्ग हैं, प्रत्येक सर्ग में सात–सात दोहों के सात सप्तक हैं। कुल मिलाकर इसमें 343 दोहे हैं।

रामाज्ञ प्रश्न– इसमें नीति, भक्ति एवं राम–महिमा का वर्णन है।

कवितावली – इस रचना में कवित्त, सवैया, छप्पय आदि छन्दों में रामायण की कथा सात कांडों में कही गई है, पर सर्वत्र क्रमबद्ध नहीं है।

गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य में श्री राम का स्वरूप– महाकवि तुलसीदास ने अपने काव्य में राम को विष्णु का अवतार मानते हुए उसके सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों का उल्लेख किया है। उन्होंने कहा है:–

''सोई दशरथ सुत भगत हित,
कोसलपति भगवान।''

तुलसीदास जी ने राम को धर्म का रक्षक और अधर्म का विनाश करने वाला माना है। उन्होंने राम के चरित्र में सौन्दर्य एवं शक्ति का समन्वय प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने राम की आराधना दास्य भाव से की है। तुलसीदास जी ने राम को सर्वगुण सम्पन्न एवं स्वयं को तुच्छ, दीन–हीन कहा है। उन्होंने ज्ञान और भक्ति में भेद न मानते हुए भी भक्ति पर अधिक बल दिया है। उनका कथन है–

''सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय अरगारि।''

तुलसीदास का राम एक आज्ञाकारी पुत्र, गुरू–भक्त, शिष्य, सच्चा मित्र, गरीबों के प्रति दया करने वाला, विद्वान और उदार हृदय है।

निष्कर्ष

ईश्वर में पूरी आस्था और मनुष्य का पूरा सम्मान ये दोनों दृष्टियाँ तुलसी में एक–दूसरे से जुडी हैं। **''सिया –राममय सब जग जानी। करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी।''** जैसी पंक्तियाँ इस गहरे आत्म–विश्वास पर ही लिखी जा सकती है, जहाँ ईश्वर और मनुष्य दोनों की एक साथ प्रतिष्ठा हो। 'सिया–राम' यदि उनकी भक्ति के लिए आश्रय–स्थल हैं जो 'सब जग' उनके रचना–कर्म के लिए। महाकवि तुलसीदास न केवल रामकाव्य के अपितु सम्पूर्ण हिन्दी–काव्य के श्रेष्ठ कवि हैं। वे एक सूरज के समान हिन्दी रामभक्ति काव्य धारा में चमकते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

(1) चतुर्वेदी, रामस्वरूप (1986) 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास', पृष्ठ–49, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

(2) शर्मा, डॉ, वासुदेव (2019) 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' पृष्ठ–100, 101,102, सूर्य भारती प्रकाशन, नई सडक, दिल्ली।

(3) शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र (1986) 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' पृष्ठ–89, 108, 109, कमल प्रकाशन, अंसारी रोड, नई दिल्ली।

(4) डॉ हरदयाल (2019) 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृष्ठ–176, मयूर बुक्स, दरियागंज, नई दिल्ली।

(5) 'दीपक' (हिन्दी) बी0ए0 प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर) (महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक) पृष्ठ– 76,76, ज्योति बुक डिपो, इब्राहिम मण्डी, करनाल।

(6) इंटरनेट (अतिरिक्त) माध्यम।